112

रात्रि क्लास 22-10-68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है?

मीठे2 रूहानी बच्चे जानते हैं कि बेहद का बाप आया हुआ है। दिल में ख्याल आवेगा ना। आत्मा कहती बाबाआया। कोन सा बाबा। बेहद का बाबा। बाबा अक्षर बहुत ही मीठा है। क्योंकि वरसा बहुत मीठा लगता है। तुम बच्चे जानते हो हम बाबा से विश्व की बादशाही का वरसा ले रहे हैं तो बहुत खुशी होती है। लौकिक से क्या मिलता है इसके भेंट में दो मुट्ठी भी नहीं मिलती। बाबा से तो 21 जन्मों लिये बहुतसुख मिलता है। बाप भी समझते हैं यह मेरे बच्चे विश्व के मालिक बनने वाले हैं। बाप को भी खुशी होती है। अन्दर में उनकी प्यार रिगार्ड रहता है। बाप बच्चों को प्यार करते हैं। बच्चे फिर बाप को रिगार्ड प्यार देते हैं। यह है रूहानी बाप। हम सभी रूहों का बाप। इस बाप से तो बेहद का सुख मिलता है। गाया हुआ है बाप बच्चों को कहते हैं तुम्हारे पास जो भूत है वह सभी मेरे हवाले करो। गुरु लोग भी कहते हैं तो तुमयह दान में दे दो। काम के लिये तो कहते अच्छा 6मास, 2मास में जाना। विषय विकार जो हैं वह दान दे दो। परन्तु कर के अल्प काल के लिये देते हैं कर के उसी जन्म लिये। बेहद का बाप तो कहते हैं यह 5विकार दान में दे दो। गुरु लोग झोली ऐसे कर बैठते हैं। अभी बाप समझाते हैं यह 5भूत ही दुखी बनाते हैं। नम्बरवन है काम। इनको छोड़ दो। यह सभी विकार यहां छोड़ दो। साथ में रह जावेगा तो पद कम हो जावेगा। मोह भी कम नहीं है। बन्दर में कितना मोह होता है। बाप जानते हैं यह पुरानी दुनिया बदल रही है। नई दुनिया में भूत होते ही नहीं। तो यहां इनको छोड़ना जरूर है। नहीं तो सजा भी खावेंगे और पद भी भ्रष्ट हो जावेगा। वह फिर सदैव के लिये हो जावेगा। किसके पास भी भूत है तो निकालना है। फिर 21 जन्म कोई भूत हो गा ही नहीं। कोई भी भूत रह जावेगा तो अपन को भी दुःखी औरों को भी दुखी करेंगे। बाप तो दुःखहर्ता सुखकर्ता है। यहां ही सभी भूतों का दान दे दो। नहीं तोखुद को भीदुःखी करेंगे। यह किचड़ा है जिन्होंने ही आधा कल्प दुःखी किया है। अभी बाप कहते हैं दान दे दो। दान कर वापिस लिया तोहरिश्चन्द्र सिसल हो जावेगा। यह एक कथा है। दृष्टान्त इस समय के हैं। सतयुग में तो शास्त्र आदि होते ही नहीं। तो अभी तुम बच्चे समझते हो यह भूत इस समय छोड़ना है। बाप कहते हैं दे दान तो छूटे ग्रहण। फिर बृहस्पत की दशा बैठ जावेगी। बाप पूछते हैं। जिसके पास कोई भूत है तो दे दो फिर 21 जन्म आवेंगे नहीं। नानक ने भी कहा है ना असंख्य चोर हरामखोर ..भूत का भार खाना कहा जाता है। वह तो बाप की महिमा गाते थे। अभी तुम समझते हो बेहद का बाप कैसे बैठ समझाते हैं। कृष्ण तो गीता सुना न सके। वह कह न सके कोटों में कोई मुझे जानते हैं। उनको देखकर तो सभी भागेंगे। यहां तो वह बात ही नहीं। बाप तो है सत्य। ऐसे बाप को आत्मा प्यार करती है। बुद्धि में नालेज है वा कमाल है आप को। कितना हमको सुख देते हो। सभीदुःखों से छुड़ा देते हो। वहां कद अकाले मृत्यु होगी ही न बाप को याद तो कर सकते हैं ना। अनेक प्रकार की युक्तियां हैं। बड़ी खुशी अथाह आनन्द आता है। बाप विश्व का मालिक बनाते हैं। परन्तु है पराया शरीरबूढ़े तन में। देख नहीं सकते हो। जानते हो। बाप बच्चों को एक ही वह अपना परिचय देते हैं। गायन है ना चाहे पत्थर करो चाहे ठूकड़ाओ हम आप का दर कभी नहीं छोड़ेंगे। बाबा हमको विश्व का मालिक बनाते हैं। ऐसे बाप के लिये कहते हो हम भूल जाते हैं। तो बाप डीगपा देते हैं ना। कोई पक्के निश्चय बुद्धि है तो प्रेम से आंसू भी आ जाते हैं। कल्प हम अपने राज्य में कितने सुखी थे। अथाह सुख था फिर पुजारी बने हैं। बाप कहते हैं तुमने कितनी ग्लानी की है। कृष्ण को कितना हिंसक चिकारी बना दिया है। जिसको फिर कहते हैं कृष्ण भगवान है। क्या2 बातें लिख दी हैं। फिर रामचन्द्र में भगवान के लियेक्या2 लिख दिया है। ग्लानी की बातें सुनाकर कितने अ को अपने धर्म में कनवर्ट कर देते हैं। एक तो शास्त्रों ने नुकसान किया है और फिर मेरी ग्लानी की है। झूठ सुनते आते हैं समझाते हैं श्रीमत पर चलो तो श्रेष्ठ बनें बनाने वाला तो बाप ही है। बाप आते हैं जरूर। अभी भगवान कृष्ण है या बाप जो राजयोग सिखलाते हैं वह भगवान है। आगे जन्म में भगवान से राजयोग सीखे हैं। छोटे2 बच्चे बैठ ऐसी2 समझते= समझावे तो नाम बाल

22-10-68 NC 22-10-68

हो जावेंगा। तुम्हारे चरणों में आ जावेंगे। यह कब भी दिल में न आना चाहिए कि हम देते हैं। जिनको दिल में आता है हम देते हैं वह तो पापात्माएं हैं। देते क्या हो! बहुतों में ज्ञान न होने कारण फिर पूछते रहते हैं। कित दें क्या करें। अरे तुम देते नहीं हो लेते हो। ममा गरीब की बच्ची थी एक कौड़ी भी नहीं ले आई फिर कितना ऊंच मर्तबा पाती है। लक्ष्मी! सर्विसएबुल बन गई और पूर्ण पवित्र। बाबा हिस्ट्री जागरापी को जानते हैं। कैसे आई। कुमारी थी। बाबा गरीब निवाज है ना। तो बाप समझाते हैं ऐसे मत समझो शिव बाबा पास कितना ध देवें। 50 दे देंठीक है कि 100 देवें तुम क्या समझती हो। ब्राहमणी से पूछते हैं। ज्ञान पूरा है नहीं। इतन देवें कि इतना देवें कितना देवें। इतना ठीक है? तो बाबा समझ जाते हैं पूरी शिक्षा मिली न है। बाप ने सम झाया है धर्मशाला हास्पीटल आदि बनाते हैं बड़ा खर्चा करते हैं। एक जन्म लिये रिटर्न में सुख अल्प काल का मिलता है। समझो राजा बनते हैं। फिर किसको दुःख दिया होगा तो शारीरीक रोग होता रहेगा। सदा सुखी तो बन नहीं सकते। बेहद का बाप बच्चों लिये सौगात ले आते हैं। बाप कहते हैं तीरी पर बहिष्त तुम बच्चों के लिये लाता हूं। तुमको दोनो बाप कितना श्रृंगारते हैं। इस समय सभी वनवास में हो। तुम्हारा ससुर घर है स्वर्ग। संगम युग है दोनो पियरघर। कितना तुमको श्रृंगारते हैं। ज्ञान और योग दोनो से श्रृंगारते हैं। दोनो बाप मिलते हैं बच्चों को श्रृंगार करने। तो उनको बड़ा प्यार से याद करना चाहिए। बाप हमको सुखी बनाते हैं तो हम बच्चे किसको दुःख नहीं दे सकते। तुम मीठे2 फूल बनते हो। बनना ही है यहां। माया भी दुस्तर है। झट भूला देती है। क्रोध दान देफिर अगर किया तो सौण दण्ड पड़ जावेंगा। सच्चे बाप के साथ सच्चा होना चाहिए। भूतों को छोड़ते जाओ। नहीं तो बहुत घाटा पड़ता जावेंगा। विकारों को छोड़ने की प्रतिज्ञा करनी चाहिए। काम है जबरद उनके लिये राखी बांधी जाती है। यह 5 भूत रावणें के हैं ना। यहां आते हो तो यह सभ्सी यहां ही छोड़ जा है। प्रतिज्ञा करनी है हम किसकी आत्मा कब नहीं दुखावेंगे। बाप किसको दुःख देते हैं क्या वह तो सभी को सुखी ही बनाते हैं। अपने ऊपर बड़ी खबरदारी रखनी होती है। विश्व का मालिक बनना कोई कम बात है क्या तुम जानते हो हम हर 5000 बर्ष बाद बाप से यह बरसा पाते हैं। अच्छा बच्चों को गुडनाईट।

रात्रिक्लास 23-10-68:- शिव बाबा याद है बच्चों को? सतयुग की बादशाही याद है बच्चों को? 8
****
जन्म याद है बच्चों को? बाप ने समझाया है ना 84 जन्मों के चक्र का ज्ञान। 84 के चक्र के ज्ञान को समझने तुम स्वदर्शनचक्रधारी विश्व के मालिक बनते हो। इसलिये विष्णु को कोई चक्र नहीं हैं। तुमको यह ज्ञान है। वि को ज्ञान नहीं है। तुम ब्राहमणों को ज्ञान है इसलिये तुमको स्वदर्शनचक्रधारी कहा जाता है। यह जानने से ही चक्रवर्ती राजा विश्व का मालिक बनते हो। फिर इस पढ़ाई से ऊंच पद पाना है। जैसे ऊंच पढ़ाई पढ़ते हैं ना। जानते हो यह ऊंच पढ़ाई है नर से नारायण बनने की। इन से ऊंच कोई पढ़ाई होती ही नहीं। ऊंचते ऊंच भगवान। वही टीचर बन ऊंच ते ऊंच पढ़ाते हैं। जिससे नई दुनिया की बादशाही मिलती है। तुम जानते हो सभी पढ़ाईयां वर्थ नाट अपेनी है। उनसे तुम गरीब ही बने हो। बच्चे जान गये हो बहुत साहुकार थे फिर भक्ति मार्ग में शास्त्र आदि पढ़ते2 नीचे गिरे। सबसे ऊंच पढ़ाई यह है। जिससे विश्व का मालिक बनते हैं। नि है तो और सभी पढ़ाई छोड़ देनी चाहिए। सभी कुछ बेहद के बाप से मिलता है। शिव बाबा के भण्डारे से की परविस होती है। तुम्हारी यह पढ़ाई है भविष्य की कमाई। तुमको कोई फिक्र नहीं। इस समय तुम ऐसे नहीं करते हो जो डर लगे। बाबा को बताते हैं बाबा हमसे बहुत ही भूलें हुई हैं। छी छी कर्म किये हैं। खून किया है। सबसे बड़ा खून है काम कटारी चलाना। परन्तु वह खून भी करते हैं। अभी परमपिता परमात्मा का परचलते हैं तो बहुत ऊंच बरसा मिलता है। फिकरात की बात ही नहीं। फिक्र से फारग स्वामी* कीदा सदगुरु कितने समय के लिये? आधा कल्प लिये। इसमें तो मुंझने की बात ही नहीं। तुम बाप के बनते हो तो बाप शिक्षा देते हो। बच्चे जानते हैं पढ़ाई के बाद में हम जावेंगे नई दुनिया में। यह किसकी बुधि में नहीं होग पढ़ने जाते हैं। सदगुरु के संग में जाते हैं। सत्य है एक। बाकी सभी है झूठ। सत्य बाबा के हम बच्चे ठहरे। औ

23-10-68:

बाबा हमको रास्ता बताते हैं। जो हम उनके साथ जावेंगे। तुम संग पर खड़े हो। दोनों को देखो। कहां जाना है। नर्क में या स्वर्ग। इसमें मुझने की तो बात ही नहीं। बाबा टाईम देते हैं, कोई भी बात में मुंझते हो तो बोलो। दो बाप से वरसा मिलना है। इनसे नहीं मिलता। इनके द्वारा मिलता है। बाप का वरसा। ब्रह्मा के तन में आना पड़ता है। पढ़ने से ही वरसा मिलता है। तो इसमें कोई भी प्रकार का संशय नहीं उठ सकता। सिर्फ माया तुमको याद करने नहीं देती हैं। माया में भी ताकत कमनहीं है। बहुत लालच देती हैं। जैसे कुमारी को लालच होती है ससुर घर महल मिलेंगे, जेवर पहनेंगे। बहुत ही कशिश होती हैं। बाप खुद कहते हैं माया बड़ी जबरदस्त है। बाप भी आलमाईटी अथारटी है ना। बाप कहते हैं माया को भी कम नहीं समझना। आधा कल्प है सुख बाप का वरसा। आधा कल्प है दुःख रावण का वरसा। बाप कहते हैं मैं बच्चों को दुःख कैसे दुंगा। भगवान अपने बच्चों को दुःख कैसे देंगे। बाबा समझाते हैं दुःख तुमको 5 विकार देते हैं। अभी तुम बच्चों को पता पड़ा है हमको ड्रामा के पलेन अनुसार अभी पुरानी दुनिया को छोड़ना है। घर जा फिर नई दुनिया में आना है। सतोप्रधान बनने में टाईम लगता है। युध चलती है। एक है कौरव सेना दूसरी है पाण्डव सेना। यह जो आत्मा है यह गाईड है। हरेक को रास्ता बताते हैं। तुम हो रूहानी गाईडस। तुम रूहानी बाप के घर का रास्ता बताते हो। तो यह सभी याद रखना है। कृष्ण की आत्मा भी जब पतित बनती है तब मैं उनकी वानप्रस्त अवस्था में प्रवेश करता हूं। तुम भी समझते हो भगवान हमको पढ़ाते हैं। मनुष्य नहीं पढ़ा सकते। देवता भी नहीं पढ़ा सकते। तुम जानते हो हमारे सुख मैगोल्डेन स्पून होगा। अभी निश्चय नहीं होता है थोड़ा आगे चल आवेंगे जब। तुम एक तो धैर्य रखो। तुम सभी दुःखों से छूटने वाले हो। वाकी थोड़ा समय है। यह बच्चे जानते हैं हम सभी दुःखों से छूटते जाते हैं। बाप धैर्य देते हैं। बच्चों को पढ़ाई में खुशी भी बहुत होनी चाहिए। ऐसे न हो यह पढ़ाई छोड़ फिर उस में लग जाओ। ऐसे भी बहुत चले गये। कुसंग में चले गये। अभी बहुत साहुकारी में खड़ा है। बचपन जैसे भूल गया। डायर्वोस दे दिया। बच्चे फरकती देते हैं। लिखा हुआ है आश्चर्यवतसुनन्ति .... हाय माया मुझे भी छोड़ी। यह खेल है। ऐसे नहीं कि भगवान को क्या पड़ी थी क्यों रचा। अरे यह तो अनादि खेल है। क्यों रचा यह प्रश्न करना भी भूर्खता है। मनुष्य जो भी बातें करते हैं सभी अनर्थ। बाप जो समझाते हैं उनमें अर्थ भरा हुआ है। वाकी यह भूकम्प आदतो होते रहते हैं। बड़ी भारी भूकम्प होगी। सभी खत्म हो जावेंगे। वाकी थोड़ा तुम्हारा टूकड़ा रहे फिर झाड़ वृधि को पाये कितना हो जाता है। बाप कहते हैं तुम पूज्य थे। फिर पुजारी बने। अभी फिर पूज्य बन रहे हो। यह बातें बाप ही समझाते हैं। कितनी बड़ी नालेज है। सभी एक समान धारणा नहीं कर सकते। अगर वे तो बहुत पुरुषार्थ करते। संशय उठाते हैं तो समझो पूरी भक्ति नहीं की है। पूरी भक्ति की होगी तो संशय नहीं उठावेंगे। बच्चों की वुधि में है ना। बाबा और निवास स्थान। ब्रह्म कोई बाप नहीं। सन्यासी ब्रह्मज्ञानी हैं। ब्रह्म को तत्व कहते हैं जिसमें आत्मायें रहती हैं। उनको कहते हैं ब्रह्माण्ड। बाप समझाते हैं मैं ब्रह्म नहीं हूं। ब्रह्म तो रहने का स्थान है। अच्छा मीठे2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडमार्निंगऔर नमस्ते।

27-10-68 प्रातः की रही हुई पायन्टसः-बाप को याद करो तो तुम्हारे पाप कट जायेंगे। पूण्य करते2 पूण्यात्मा बन जावेंगे। यहां जमा होता है फिर नई होगा। व्यापार है ना। अभी जमा होता है। तुम आधा कल्प पूण्यात्मा बनते हो। फिर विकार में जाने से पापात्मा बन जाते हो। यह है कयामत का समय। सभी का हिसाब किताब चुक्तू होना है। ड्रामा के पलेन अनुसार। सजा मिलने में टाईम नहीं लगता है। बल चढ़ाने का रिवाज भी कितना समय चला हुआ है। देवी पर मनुष्य का बल अभी तब छिपा कर चढ़ाते हैं। यह तो खूनी लोगों का काम है तो आदमखोर मनुष्य थे। देवी पर बल चढ़ाते थे। फिर उसको महाप्रसाद समझ खाते थे। कितना यह गिरे हुये हैं जब यह ऊंच थे। फिर गिरना भी इस समय ही हैं। वेअकल भी बनते हैं। अच्छा।

हलो मधुवन गुलशन फुलवारी से हम सभी आत्माओं फूलों का दिल व जान सिक व प्रेम से प्यारले वेहद के वागवान सहित बहुत2 स्नेहसुगन्ध स्वीकार करना जी।